पत्थर के औज़ार बनाना इंसानों ने कई बार सीखा

ताज़ा अनुसंधान से पता चला है कि पाषाण युग के अलग-अलग मानव समूहों ने पत्थर के औज़ार बनाना स्वतंत्र रूप से सीखा था। पहले माना जाता था कि इन औज़ारों को बनाना एक समूह ने ईजाद किया और फिर इस समूह के प्रवास के साथ यह तकनीक फैलती गई।

वर्ष 2008-09 में आर्मेनिया के एक पुरातत्व स्थल नॉर गेगी पर खुदाई के दौरान मिली वस्तुओं के विश्लेषण के आधार पर इस धारणा को चुनौती दी गई है कि पत्थर के औज़ार बनाने की तकनीक अफ्रीकी कबीलों के साथ ही दुनिया भर में फैली थी।

प्रारंभिक पाषाण युग के लोग पत्थर के औज़ार लगभग उसी तकनीक से बनाया करते होंगे जिस तरह से आज कोई मूर्तिकार पत्थर को तराशकर मूर्ति बनाता है। ऐसे औज़ारों को *बायफेशियल* कहते हैं। इस तकनीक में पत्थर को तब तक काटा-छांटा जाता है जब तक कि वांछित आकार न बन जाए।

पत्थर के औज़ार बनाने की दूसरी तकनीक को लेवलवा (Levallois) तकनीक कहते हैं। यह नाम पेरिस के उपनगर लेवलवा पेरे के नाम पर है जहां सबसे पहले इस तकनीक का विवरण दिया गया था। इसमें पहले तो पत्थर के टुकड़े को एक उपयुक्त आकार के कोर में तराशा जाता है। फिर इस कोर पर से पत्थर की चिप्पियां काटी जाती हैं। ये चिप्पियां औज़ार के रूप में इस्तेमाल की जाती हैं। ये औज़ार हल्के-फुल्के होते हैं और ज़्यादा कार्यक्षम होते हैं।

1990 के दशक में पुरातत्ववेत्ताओं ने मत व्यक्त किया था कि लेवलवा तकनीक पहले अफ्रीका में विकसित हुई और वहां से कबीलों के प्रवास के साथ युरोप और एशिया में फैली। इस परिकल्पना के पीछे एक कारण यह था कि लेवलवा तकनीक से बने कई औज़ार अफ्रीका में पहले के काल में मिलते हैं। मगर अब कनेक्टीकट विश्वविद्यालय के पाषाण युग विशेषज्ञ डेनियल एडलर द्वारा नॉर गेगी में खुदाई में मिली वस्तुओं से इस धारणा पर सवाल खड़े होने लगे हैं।

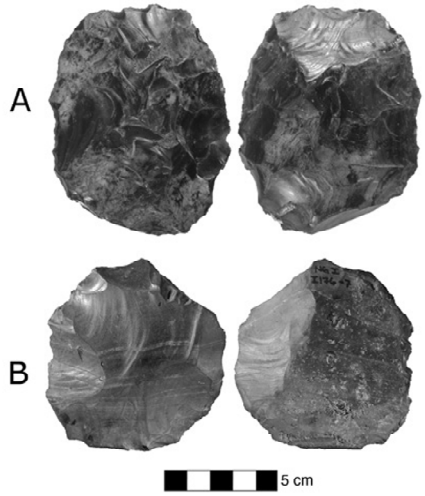

नॉर गेगी स्थल 2 लाख से 4 लाख साल पुराना है। यही वह समय है जब अफ्रीका में प्राचीनतम लेवलवा औज़ार मिले हैं। यानी यहां पाई गई वस्तुएं उतनी ही पुरानी हैं। शोधकर्ताओं को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि इस स्थल पर बायफेशियल और लेवलवा दोनों तरह के औज़ार मिलते हैं। यदि लेवलवा तकनीक यहां बाहर से आई होती तो दोनों तरह के औज़ार मिलने का कोई कारण नहीं था। दोनों तरह के औज़ार मिलने से पता चलता है कि यहां के लोगों ने पहले बायफेशियल तकनीक विकसित की और फिर उसके आधार पर लेवलवा तकनीक तक पहुंचे, यह बाहर से नहीं आई थी। ***(स्रोत फीचर्स)***